2 अगस्त 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का परिचय सम्मेलन-

नवपल्लव कार्यक्रम संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 15 जुलाई को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के सत्र 2019-20 का परिचय सम्मेलन 'नवपल्लव' के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

यह कार्यक्रम तीन सत्रों में संपन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजीवजी गोधा एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। मंचासीन अतिथियों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ.प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती संस्कृति गोधा, विदुषी प्रतीति पाटील, जिनकुमारजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, नीशूजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री, गौरवजी उखलकर, जिनेन्द्रजी शास्त्री, अनेकान्तजी शास्त्री, मंथनजी गाला आदि महानुभावों के अतिरिक्त श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सोगानी, श्री हीराचंदजी बैद एवं श्री कृष्णदेवजी शुक्ल भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ में नवागन्तुक 38 छात्रों ने यहाँ आकर तत्त्वप्रचार की भावना व्यक्त करते हुए अपना परिचय दिया। साथ ही प्रत्येक कक्षा के 4-4 छात्रों ने आकर अपनी कक्षा के हर छात्र का परिचय कराते हुए उनकी उपलब्धियों से भी परिचय कराया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में छात्रों से कहा कि आप विश्व की सर्वश्रेष्ठ विद्या को सीख रहे हैं, जो जन्म-मरण के दु:खों का, मोह-राग-द्वेष रूप अनंत आकुलता का अभाव कर अनंत सुख प्रदान करती है। बड़ा विद्वान स्वर्ग से उतरकर नहीं आता; अपितु हममें से जो कोई मेहनतकर शास्त्रों के मर्म को समझेगा, वही बड़ा विद्वान बनेगा। साथ ही सोनगढ, अमायन आदि अनेक विद्यालयों के छात्रों द्वारा यहाँ प्रवेश लेने पर उनके ट्रस्टियों एवं अधिकारियों की प्रशंसा करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी, अच्युतकांतजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, विदुषी प्रतीति पाटील, श्री कृष्णदेवजी शुक्ल आदि ने भी छात्रों को उद्बोधन दिया।

वर्तमान में जयपुर में कार्यरत स्नातकों का परिचय पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री ने दिया।

कार्यक्रम का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के दुर्लभ जैन, मयंक जैन, वैभव जैन, रवीन्द्र जैन व स्वप्निल जैन ने किया। मंगलाचरण शास्त्री तृतीय वर्ष के आयुष जैन पिपरिया एवं दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। ●

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें।

● **टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें।** संपर्क सूत्र - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.- 0141-2705581, 2707458, मो. 9785645793 (नीशू शास्त्री)
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

शिविर की तिथि परिवर्तन

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में अक्टूबर माह में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 13 से 20 अक्टूबर तक लगने जा रहा है।

सम्पादकीय –

पंचकल्याणक : पाषाण से परमात्मा बनने की प्रक्रिया

2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

केवलज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् ॐ के रूप में उनकी निरक्षरी या एकाक्षरी दिव्यध्वनि सर्वांग से खिरती है। वे किसी एक व्यक्ति के लक्ष से एक भाषा विशेष में उपदेश नहीं देते। किसी के प्रश्नों का उत्तर नहीं देते। उनकी इस दिव्यध्वनि का ऐसा अतिशय होता है कि श्रोताओं के मन में जो भी प्रश्न उठते हैं, जो भी जिज्ञासा होती है, उसका सहज समाधान स्वतः ही हो जाता है। उनकी दिव्यध्वनि में तो द्वादशांग के रूप वस्तु स्वरूप का प्रतिपादन ही होता है। चार अनुयोगों की शैली में जो जिनवाणी आचार्यों द्वारा करुणाबुद्धि से सरल प्रश्नोत्तरी की शैली में लिपिबद्ध हुई, उसी दिव्यध्वनि का सार शास्त्र के रूप में हमें उपलब्ध हैं।

तीर्थंकर भगवान की इस धर्मसभा को ही समोशरण कहते हैं। इस धर्मसभा की रचना इन्द्र द्वारा की जाती है। धर्मसभा में श्रोता मनुष्य, देव तो होते ही हैं, पंचेन्द्रिय संज्ञी पशु भी होते हैं, सभी वैर-विरोध भूलकर धर्मामृत का पान करते हैं। यह चल धर्मसभा तीर्थंकर अरहंत की आयु पर्यन्त चलती रहती है। अन्त में जब तीर्थंकरों का निर्वाण होता है, तब उनका निर्वाण कल्याण महोत्सव मनाया जाता है, और वे सिद्ध पद प्राप्त कर अनन्तकाल तक अनन्त सुख में मग्न रहते हैं।

साक्षात् तीर्थंकर भगवान के अभाव में उनके पावन उपदेशों एवं आदर्शों का अनुकरण करने हेतु एवं उनकी मंगलमय उक्त घटनाओं के निमित्त से अपने जीवन को मंगलमय बनाने हेतु जो नवनिर्मित तदाकार जिनबिम्बों की विधि-विधानपूर्वक प्रतिष्ठा होती है उनमें पूज्यता स्थापित करने के लिए ये पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव किए जाते हैं, ये उन्हीं असली पंच-कल्याणकों की सत्यापित, प्रमाणित आदर्श प्रस्तुति है। मंच पर जो पाँचों कल्याणकों का आगम के अनुरूप आकर्षक, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाप्रद प्रदर्शन होता है, वह तो मात्र उपस्थित जनता की सामान्य जानकारी हेतु ही होता है, साथ ही प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा मंच के पीछे वेदी में विराजमान जिनबिम्बों की विधि-विधानपूर्वक मंत्रों द्वारा स्थापना निक्षेप से प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न होती है, जिससे उनमें पूज्यता आती है। आगम में इसका स्पष्ट उल्लेख है –

''जिनप्रतिमा जिन सारखी, कही जिनागम माँहि।''

इसप्रकार पंचकल्याणक महोत्सवों के माध्यम से प्रतिष्ठित प्रतिमायें साक्षात् समवसरण में विराजमान जिनेन्द्र के समान ही भव्यजीवों को सम्यग्दर्शन में निमित्त होती हैं।

यहाँ ज्ञातव्य यह है कि साक्षात् समोशरण में भी तो हमें इन चर्मचक्षुओं से तीर्थंकर भगवान का परम औदारिक शरीर ही दिखाई देता है। उनके आत्मा के दर्शन तो हमें वहाँ भी नहीं होते। अतः हमारे लिए तो हमारा जिन मन्दिर ही तीर्थंकर भगवान का समवसरण है जिनप्रतिमा ही जिनेन्द्र हैं और शास्त्र ही उनकी साक्षात् दिव्यध्वनि का सार है।

जब तीर्थंकर भगवान का केवलज्ञान कल्याणक के पूर्व तपकल्याणक होता है, तब उनके वैराग्य के प्रसंगों का जो सशक्त प्रदर्शन होता है, वह हजारों भव्य जीवों को वैराग्य में प्रेरक बनता है, अनेक व्यक्ति ब्रह्मचर्यव्रत धारण करते हैं, अनेक मन ही मन विषय-कषायों से विरक्त होते हैं। पाप प्रवृत्तियों को त्यागने की भावना भाते हुए सन्मार्ग में लगते हैं। दिल खोलकर चारों प्रकार का दान देते हैं। घर-घर में जिनवाणी पहुँचाने का कार्य दानदाताओं द्वारा किया जाता है।

महीनों पहले से धार्मिक वातावरण बन जाता है। नवनिर्मित जिन मन्दिर हजारों वर्षों तक भव्यात्माओं के कुछ मोक्षमार्ग के निमित्त बनते हैं। देश में आतंकवाद, चोरी, डकैती, ठगी, दुराचार आदि की दुष्प्रवृत्तियाँ जो शासन के लिए सदैव सरदर्द बनी रहती हैं – उन पर भी इन धार्मिक भावनाओं के प्रचार-प्रसार से बहुत कुछ अंकुश लगता है – इसप्रकार ये महोत्सव देश की लौकिक समस्याओं को सुलझाने में भी साधन बनते हैं। सभी भव्य जीव इन आयोजनों से शतत् लाभ लेते रहें – इस मंगलभावना के साथ विराम।

परिग्रह को पाप मानने वालों के पास अधिक परिग्रह क्यों ?

एक नेताजी अपने भाषण में कह रहे थे कि ''जो अपरिग्रह को ही सबसे बड़ा धर्म और परिग्रह को सबसे बड़ा पाप कहते हैं, उन्हीं के पास सबसे अधिक परिग्रह क्यों होता है ? समझ में नहीं आता उनमें यह विरोधाभास क्यों?

ये अपने परिग्रह पाप को कम क्यों नहीं करते ?''

संभव है उनका इशारा उन चन्द्र धन कुबेरों की ओर हो, जो चुनाव में चन्दा देने से आना-कानी करते हैं। पार्टियों को पर्याप्त चन्दा नहीं देते अथवा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में धन खर्च नहीं करते। अस्तु; बात तो नेताजी की अच्छी ही थी। परिग्रहवाले पूंजीपतियों की समालोचना सुनकर सामान्य जनता भी खुश हो रही थी, अत: तालियाँ भी खूब बज रही थीं। संयोग से मैं उस सभा की अध्यक्षता कर रहा था। अत: अपनी बात कहने के साथ पूर्व वक्ताओं के प्रश्नों के उत्तर देना भी मेरा दायित्व था। अत: मैंने सर्वप्रथम नेताजी से यह निवेदन किया कि आपने जैनों के पास पैसा होने की बात तो कही; पर उनके पास पैसा क्यों होता है ? क्या इस पर भी कभी गौर किया? वे मौन रहकर प्रश्नवाचक मुद्रा में मेरी ओर देखने लगे।

मैंने कहा - सुनो ! **पहली बात** तो यह कि जैनी अधिकांश व्यापारी होते हैं और 'व्यापारे लक्ष्मी वसति' यह बात प्रसिद्ध है, इसलिए जैनों के पास पैसा होता है।

दूसरी बात - जैनों को जन्मजात धर्म के संस्कार मिलने से प्राय: सप्त व्यसन के त्यागी होते हैं अत: शराब वे नहीं पीते, मांसाहार वे नहीं करते, वैश्यावृत्ति वे नहीं करते। जुआ जैसे दुर्व्यसन भी अधिकांश जैनों में नहीं होते। ये ही अवगुण बर्बादी के कारण हैं, जो अधिकांश जैनों में नहीं हैं। जिन जैनों में ये दोष (अवगुण) आ जाते हैं, वे बर्बाद हो जाते हैं। सूखी दाल-रोटी में और छने पानी पीने में कितना खर्च होता है ? अत: थोड़ा-थोड़ा भी बचाया तो बहुत हो जाता। कहा जाता है - **''बूँद-बूँद तैं घट भरै और कण-कण जोड़े मन जुड़े।''**

अत: जैनों के पास पैसा होना स्वाभाविक है।

तीसरी बात मैंने यह कही कि जैनों को जन्म से **'सत्वेषुमैत्री'** का पाठ पढ़ाया जाता है। **'प्रेम भाव हो सब जीवों में'** का सबक सिखाया जाता है। **क्रोधादि कषायें** न करने के संस्कार दिए जाते हैं। अत: वे भाई-भाई आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं हैं। कभी यदा-कदा लड़ें भी तो हथियार तो उनके पास होते ही नहीं हैं। मैं-मैं तू-तू होकर रह जाते, बहुत हुआ तो हाथापाई, बस...। जबकि दूसरे लोगों के बारे में आये दिन पेपरों में पढ़ने को मिलता है। एक ने बन्दूक से दूसरे की जान ले ली, जान लेनेवाला जेल में गया और दूसरा परलोक में। हो गई मुकदमेंबाजी शुरू, उनका बचा-खुचा सब माल लग गया ठिकाने। यह भी एक बर्बादी का कारण है। जैन लोग समझौता में विश्वास करते हैं, अत: उनके अधिकांश झगड़े कोर्ट तक पहुँचते ही नहीं हैं। वे आपस में बैठकर ही निबटा लेते हैं, अधिक हुआ तो पारिवारिक या सामाजिक पंचायत में तो निबट ही जाते हैं।

ये कारण तो हुए जैनों के पास पैसा होने के। अब देखना यह है कि जब ये अपरिग्रह की बात करते हैं, परिग्रह को पाप कहते हैं तो परिग्रहरूप पापपुंज रखते क्यों हैं ? कम क्यों नहीं करते ? **(क्रमश:)**

वीर शासन जयंती संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 18 जुलाई को वीरशासन जयंती मनाई गई, जिसमें प्रात: वीरशासन जयंती की विशेष पूजा आयोजित हुई।

इस अवसर पर **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा विशेष व्याख्यान हुआ। रात्रि में प्रवचन के पश्चात् वीरशासन जयंती पर छात्रों द्वारा विशेष कार्यक्रम रखा गया, जिसमें अनेक छात्रों ने कविताएं एवं वक्तव्य प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण शास्त्री तृतीय वर्ष के दुर्लभ जैन गुढाचंद्रजी ने एवं संचालन मयंक जैन बण्डा ने किया। सभी कार्यक्रम डॉ. शांतिकुमारजी पाटील (उपप्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय) के निर्देशन में पूर्ण हुए।

कार्यक्रम में पूजन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल ने ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण पंचपरमागम पर स्वस्तिक बनाकर पंचपरमागमों का महत्व बताया।

2. दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 21 जुलाई को वीरशासन जयंती मनाई गई, जिसमें वीरशासन जयंती पूजन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त **ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना** एवं **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के प्रवचनों का लाभ मिला। स्थानीय विद्वानों में पण्डित राकेशजी जैन घेवरा मोड, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुरा, पण्डित विवेकजी शास्त्री विश्वासनगर, पण्डित मयंकजी शास्त्री, पण्डित नवीनजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री शंकरनगर, पण्डित अमनजी शास्त्री कृष्णानगर आदि का समागम प्राप्त हुआ। पाठशाला के बच्चों द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 3 सितम्बर 2019 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 36 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 29 जुलाई 2019 तक हमारे पास 300 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 29 जुलाई 2019 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 261 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वान : 1. **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** दिल्ली (विश्वासनगर), 2. **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** जयपुर, 3.**ब्र. यशपालजी जैन जयपुर :** जयपुर, 4. **ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना :** विदिशा (किला अन्दर), 5. **पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन :** सम्मेदशिखरजी, 6. **पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** हिम्मतनगर, 7.**पण्डित अभयकुमारजी देवलाली :** कोलकाता, 8. **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली :** सोनगढ, 9. **पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी :** अजमेर, 10. **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर :** सम्मेदशिखरजी, 11. **पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा :** राजकोट, 12. **पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद :** चैतन्यधाम, 13. **पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर :** कोटा (इन्द्रविहार), 14. **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा :** अहमदाबाद (वस्त्रापुर), 15. **संवेगी केशरीचंदजी धवल :** सहारनपुर, 16. **पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** राजकोट, 17. **पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड :** मुम्बई (मलाड), 18. **डॉ. दीपकजी जैन जयपुर :** उज्जैन, 19. **पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** औरंगाबाद।

विदेश : 1. **वर्जीनिया :** ब्र. अभिनन्दनकुमारजी देवलाली, 2.**लन्दन :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, 3. **न्यूजर्सी :** पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, 4. **शिकागो :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, 5.**सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, 6. **दुबई :** डॉ. नीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा।

मध्यप्रदेश

1.–2. **विदिशा (किला अन्दर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना व ब्र. अमित भैया, 3. **उज्जैन (क्षीरसागर) :** डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर, 4. **अशोक नगर :** पण्डित पुनीतजी मंगलवर्धिनी भोपाल, 5. **जबलपुर :** ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, 6. **बड़नगर :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, 7. **इन्दौर (स्वाध्याय भवन) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, 8.**इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित सुदीपजी इंजी. बीना, 9. **इन्दौर (साधना नगर) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, 10. **इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित अनुभवजी करेली, 11. **भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर, 12. **बीना :** पण्डित कमलेशजी शास्त्री ग्वालियर, 13. **रतलाम (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, 14–15. **गुना (वीतराग–विज्ञान) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर व पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, 16. **गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, 17. **टीकमगढ :** पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, 18.**ग्वालियर (सोढा का कुआ) :** पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, 19.**भोपाल (चौक) :** पण्डित सुरेन्द्रजी इन्दौर, 20. **खनियांधाना :** पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, 21. **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित पदमजी अजमेरा इन्दौर, 22. **भिण्ड (परमागम मंदिर) :** पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, 23. **जबेरा :** पण्डित ज्ञाताजी सिंघई सिवनी, 24. **जावरा :** पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, 25. **छिन्दवाड़ा :** विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली, 26.**मंदसौर (नई आबादी) :** पण्डित अश्विनजी शास्त्री नानावटी, 27.**मंदसौर (कालाखेत) :** पण्डित नेमीचंदजी ग्वालियर, 28. **रांझी (जबलपुर) :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री विदिशा, 29. **आरोन :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर, 30. **सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित आकेशजी उभेगांव, 31. **सिवनी :** पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली, 32–33. **कोलारस (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया व पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, 34. **करेली :** पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई, 35. **सनावद (समवशरण मन्दिर) :** पण्डित संदीपजी मेहता उदयपुर, 36. **सिंगोली :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 37. **राघौगढ :** पण्डित चन्दूभाई कुशलगढ, 38–39. **कटनी :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा व इंजी. संतोषजी, 40. **खण्डवा :** पण्डित सुनीलजी देवरी, 41. **सिलवानी :** पण्डित राजेन्द्रजी टीकमगढ, 42. **शिवपुरी :** डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, 43. **राघौगढ :** पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर, 44. **खुरई (सेठजी का मंदिर) :** पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, 45. **खुरई (गुरुकुल) :** पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, 46. **खुरई (स्टेशन मंदिर) :** पण्डित कार्तिकजी शास्त्री बांदा, 47. **दलपतपुर :** पण्डित निखलेशजी शास्त्री, 48.**खैरागढ :** पण्डित सन्दीपजी शास्त्री शहपुरा, 49–51 **भोपाल (ज्ञानोदय तीर्थ) :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा व पण्डित शुभमजी शास्त्री द्रोणगिरि, 52. **बण्डा :** पण्डित जितेन्द्रजी फुटेरा, 53–55. **गोरमी :** पण्डित पूरणचंदजी जैन मौ, पण्डित चेतनजी शास्त्री, पण्डित रविजी शास्त्री, 56–58. **सोनागिर :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, विदुषी जीनलबेन मुम्बई, 59. **विदिशा :** विदुषी परिणति जैन, 60. **शहडोल :** पण्डित मंथनजी शास्त्री गाला मुम्बई, 61. **सागर (तारण–तरण) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, 62. **गौरझामर (नयापुरा) :** ब्र. चन्द्रसेनजी भोपाल, 63. **गौरझामर (शांतिनाथ जिनालय) :** पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना, 64.**गढाकोटा :** पण्डित नेमचंदजी शास्त्री खतौली, 65. **शुजालपुरमण्डी :** पण्डित लालारामजी इन्दौर, 66. **शुजालपुर (सिटी) :** पण्डित राजेन्द्रजी पिपरई, 67. **ग्वालियर (चेतकपुरी) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार, 68.**उमरिया :** पण्डित अंकितजी शास्त्री कन्नपुर 69. **बावई (होशंगाबाद) :** पण्डित चितरंजनजी छिन्दवाड़ा, 70. **हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी, 71.**बेगमगंज :** पण्डित सचिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, 72. **शाहगढ :** पण्डित आयुषजी शास्त्री जबलपुर, 73–76. **मगरौन :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, विदुषी पुष्पाबेन, पण्डित देवेन्द्रजी भोपाल व पण्डित अतिशयजी शास्त्री चौरई, 77. **राघौगढ (विधान) :** पण्डित निष्कर्षजी शास्त्री नौगांव, 78. **छिन्दवाड़ा (गांधीगंज) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री भगवां, 79. **नरवर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री गढाकोटा, 80. **सिहोर :** पण्डित राहुलजी शास्त्री हीरापुर, 81. **शहपुरा (विटौनी) :** पण्डित अनुजजी शास्त्री खड़ैरी, 82–

84. **बसारी :** पण्डित अतिशयजी शास्त्री ब्यवहारी व पण्डित सम्यक्जी शास्त्री कोटा, 85. **बटियागढ :** पण्डित शुभमजी शास्त्री घुवारा, 86. **सागर (मकरोनिया) :** पण्डित नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 87. **अमायन :** पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, 88. **फुटेरा :** पण्डित अरिहंतजी शास्त्री भिण्ड।

महाराष्ट्र

1. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, 2. **मुम्बई (दादर) :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी जयपुर, 3. **मुम्बई (बोरिवली) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, 4. **मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित जयकुमारजी कोटा, 5. **मुम्बई (भायंदर) :** पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, 6. **मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, 7. **मुम्बई (दहिसर) :** पण्डित रमेशजी मंगल ललितपुर, 8. **मुम्बई (वसई रोड) :** ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, 9.–10. **गजपंथा :** पण्डित प्रकाशजी झांझरी उज्जैन व पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगांव, 11. **वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पण्डित रमेशजी शास्त्री जयपुर, 12. **कारंजा :** पण्डित महेशजी ग्वालियर, 13–15. **देवलाली :** पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री पिड़ावा, 16. **पुणे (युवा संघ) :** डॉ. विनोदजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, 17. **सोलापुर :** ब्र. डॉ. मनोजजी जबलपुर, 18.**कोल्हापुर :** पण्डित संयमजी शास्त्री शेटे, 19. **बाहुबली (कुम्भौज) :** डॉ. नेमीनाथजी दानोली, 20–21. **हिंगोली :** पण्डित अमोलजी सिंघई व पण्डित पंकजजी सिंघई, 22–25. **सांगली :** पण्डित महावीरजी पाटील शास्त्री, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री शेटे, डॉ. स्वयंप्रभा पाटील, पण्डित अभिषेकजी जोगी गजपंथा, 26. **कारंजा (गुरुकुल) :** पण्डित सतीशजी शास्त्री गवारे, 27. **औरंगाबाद (गारखेड) :** पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर शास्त्री, 28–29. **मुम्बई :** पण्डित किशोरजी शास्त्री केसापुरी व पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, 30. **भिलवडी :** पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, 31.**औरंगाबाद :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 32. **गजपंथा :** पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, 33. **सेलू :** इंजी. अनिलजी इन्दौर, 34.**मुक्तागिरि :** डॉ. मानमलजी कोटा, 35. **कारंजा (वीरवाडी) :** पण्डित चिंतामणिजी शास्त्री औरंगाबाद, 36. **मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी, 37. **हिंगोली :** पण्डित सुबोधजी सिवनी।

राजस्थान

1. **कोटा (इन्द्र विहार) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, 2.**कोटा (रामपुरा) :** पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, 3. **उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** ब्र. नन्हे भैया सागर, 4.–6. **अलवर :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अजितजी शास्त्री, पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री, 7. **पिड़ावा :** पण्डित अभिषेकजी उभेगांव, 8. **अजमेर (वीतराग–विज्ञान) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, 9. **उदयपुर (से.–11) :** पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, 10. **उदयपुर गायरियावास :** पण्डित खेमचंदजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी, 11.**चित्तौड़गढ (कुंभा नगर) :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, 12.**निवाई :** पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, 13–15. **दौसा :** पण्डित संजयजी शास्त्री भोगांव, अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री टीकमगढ, 16. **पिड़ावा :** पण्डित मनीषजी शास्त्री, 17.–18. **उदयपुर :** डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित वीरचंदजी शास्त्री, 19. **उदयपुर–देवाली :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, 20.–21. **झालरापाटन :** पण्डित आशुजी शास्त्री व पण्डित शुभमजी शास्त्री, 22. **बिजौलिया :** विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर, 23. **सेमारी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री, 24.**बूंदी :** पण्डित निर्मलजी एटा, 25. **अजमेर (विधान) :** पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, 26. **खैरात (प्रतापगढ) :** पण्डित संयमजी शास्त्री खनियांधाना, 27. **टोकर :** पण्डित अनर्घ्यजी शास्त्री जयपुर, 28. **कूण :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री जयपुर, 29. **डबोक :** पण्डित आयुषजी शास्त्री मड़देवरा, 30. **बारां :** पण्डित हरीशजी शास्त्री जयपुर, 31. **किशनगढ :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री सिवनी, 32. **डूंगरपुर :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 33. **झालाजी का बाराना :** पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा, 34. **बैर :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री बांसा, 35. **अलीगढ :** पण्डित अजयजी शास्त्री खड़ैरी, 36. **मण्डाना :** पण्डित विपिनजी शास्त्री किशनपुरा, 37. **तालेड़ा :** पण्डित विशालजी शास्त्री समर्रा, 38. **कापरेन :** पण्डित रितिकजी शास्त्री कापरेन, 39. **बेगू :** पण्डित उमंगजी शास्त्री अमरमऊ, 40. **अजमेर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री बण्डा।

उत्तर प्रदेश

1.–2. **अलीगढ मंगलायतन :** पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा व विदुषी पुष्पाजी खण्डवा, 3. **ललितपुर (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित कमलजी जबेरा, 4. **मेरठ :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, 5. **सहारनपुर :** संवेगी केशरीचंदजी धवल छिन्दवाड़ा, 6.–7. **खेकड़ा :** ब्र. पुष्पाजी ब्र.ज्ञानधाराजी उज्जैन, 8.–9. **ललितपुर :** पण्डित भानुकुमारजी शास्त्री व पण्डित राहुलजी शास्त्री नोगांव, 10. **कानपुर :** पण्डित आप्तअनुशीलनजी शास्त्री, 11–12. **शिकोहाबाद :** पण्डित प्रियांशजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित सर्वज्ञजी शास्त्री बरगी, 13. **भर्तना :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री हिरावल, 14–16. **आगरा :** पण्डित अमितजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित सम्यक्जी शास्त्री बड़ामलहरा व पण्डित शशांकजी शास्त्री चन्देरी।

गुजरात

1.–3. **अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, पण्डित मनीषजी सिद्धांत, 4. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, 5. **अहमदाबाद (नरोड़ा) :** पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, 6–7. **राजकोट :** पण्डित वीरेन्द्रजी जैन आगरा व पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, 8. **हिम्मतनगर :** पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, 9. **बड़ौदा :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, 10. **अहमदाबाद (मणिनगर) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, 11. **अहमदाबाद (आशीष नगर) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री मुम्बई, 12. **अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित नयनजी शास्त्री खनियांधाना, 13. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित अरिहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 14. **अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री भोपाल, 15. **अहमदाबाद (पालड़ी) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, 16. **बोटाद :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, 17–18. **सुरेन्द्र नगर :** पण्डित निर्मलजी सागर व पण्डित दीपकजी वस्त्रापुर, 19–20. **दाहोद :** पण्डित राकेशजी दोशी परतापुर व पण्डित वीरेन्द्रजी शाह गढी, 21. **सूरत :** पण्डित ज्ञाताजी झांझरी उज्जैन, 22. **वापी :** पण्डित अनिलजी दहिसर, 23. **जामनगर :** पण्डित निशंकजी शास्त्री बारासिवनी।

अन्य प्रांत

1. **कोलकाता :** पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, 2.–3. **बेलगांव :** पण्डित संजयजी पुजारी व पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना,

4.–5. **बैंगलोर :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित किशोरकुमारजी शास्त्री राजुरा, 6.–9. **सम्मेदशिखरजी :** पण्डित विमलजी झांझरी, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, ब्र. समताबेन व विदुषी प्रतीति पाटील, 10. **खैरागढ :** पण्डित प्रेमचंदजी, 11–12. **चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, 13.–14. **चेन्नई (आगमबाकम्) :** पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री व पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, 15. **चेन्नई (पम्मल) :** पण्डित उमापतिजी शास्त्री, 16. **चेन्नई (अम्बात्तूर) :** पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, 17. **चेन्नई (कोलात्तूर) :** पण्डित जयराजनजी शास्त्री, 18. **चेन्नई (पुलल) :** पण्डित विनोदकुमारजी शास्त्री, 19. **उगार :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री बेलगांव, 20. **सांकरा :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री रायपुर, 21–23. **रायपुर :** पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित तन्मयजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री, 24. **उगार :** पण्डित राजेन्द्रजी सांगाव, 25. **सेडवाल :** पण्डित अनेकान्तजी जैन, 26. **कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा।

दिल्ली

1.–2. **विश्वास नगर :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, 3. **शिवाजी पार्क :** पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 4. **राजेन्द्र नगर :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, 5.पण्डित ऋषभजी शास्त्री, 6. पण्डित चिन्मयजी शास्त्री ध्रुवधाम, 7.पण्डित आकाशजी शास्त्री ध्रुवधाम, 8. पण्डित सूरजजी काले शास्त्री ध्रुवधाम, 9. पण्डित नमनजी शास्त्री ध्रुवधाम, 10. पण्डित शुभमजी शास्त्री ध्रुवधाम, 11. पण्डित दीपकजी शास्त्री ध्रुवधाम, 12. पण्डित अनुरागजी शास्त्री ध्रुवधाम, 13. पण्डित ऋषभजी शास्त्री ध्रुवधाम, 14. पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री ध्रुवधाम, 15. पण्डित अनुरागजी शास्त्री फुटेरा, 16. पण्डित मयंकजी शास्त्री लखनादौन, 17. पण्डित विनम्रजी शास्त्री बड़ागांव, 18.पण्डित एकांशजी शास्त्री खड़ैरी, 19. पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री मड़देवरा, 20. पण्डित समकितजी शास्त्री बकस्वाहा, 21. पण्डित प्रांजलजी शास्त्री भोपाल, 22. पण्डित अक्षयजी शास्त्री दलपतपुर, 23. पण्डित अचिंत्यजी शास्त्री बण्डा, 24. पण्डित दर्शनजी शास्त्री जयपुर, 25. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री देवराहा।

विद्वान चाहिये

अपनी तरह की अद्भुत योजना **"Universe of the Spiritually enlightened (USE)"** के अन्तर्गत विद्वानों की आवश्यकता है, जो प्रवचन व कक्षाएं ले सकें तथा पूजन, विधान, ग्रुप पिकनिक, यात्राएं आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन करा सकें।

उक्त विद्वानों को प्रतिवर्ष अत्याधुनिक पद्धति से विविध क्षेत्रों में कार्य करने का नियमित प्रशिक्षण तो दिया ही जायेगा, साथ ही उन्हें विविध मूल्यांकन एवं प्रबन्धन पद्धतियों का प्रशिक्षण भी नियमित अन्तराल से दिया जायेगा। उनको प्रचुर राशि से योग्यतानुसार भुगतान भी किया जायेगा। **साक्षात्कार –** रविवार, दि.11 अगस्त, 2019

स्थान – टोडरमल स्मारक भवन,

संपर्क – अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, 9821016988,

Vice Chancellor - Universe of the Spiritually enlightened, Mumbai; **E-mail :** us.enlightened@gmail.com

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2019

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 16 अगस्त 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड –प्रथम वर्ष
शनिवार 17 अगस्त 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड –द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड –प्रथम वर्ष
रविवार 18 अगस्त 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (मौखिक) 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड –द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

प्रबन्धक–परीक्षा बोर्ड

रविवारीय गोष्ठियाँ संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर की पावन प्रेरणा से आत्मायतन ग्वालियर में नवनिर्मित श्री समयसार विद्यानिकेतन में दिनांक 30 जून को **पंचम** रविवारीय गोष्ठी **ग्रीष्मकालीन अवकाश के खट्टे–मीठे अनुभव** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी जैन (अरिहंत पेठा) दानाओली, मुख्य अतिथि पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री एवं विशिष्ट अतिथि श्री हरीषजी जैन थे। गोष्ठी का मंगलाचरण आकिंचन जैन खनियांधाना ने एवं संचालन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

● 7 जुलाई को **षष्टम्** रविवारीय गोष्ठी **षट् आवश्यक** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अजितजी गोरमी (अध्यक्ष–मुमुक्षु मण्डल ग्वालियर), मुख्य अतिथि पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री (संयोजक – समयसार विद्यानिकेतन) एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती अंजलि जैन (प्राचार्य – समयसार विद्यानिकेतन) थे। गोष्ठी का मंगलाचरण श्रेयांस जैन गोरमी एवं संयोजन आकिंचन जैन खनियांधाना व आदि जैन टीकमगढ ने किया।

● 15 जुलाई को **सप्तम** रविवारीय गोष्ठी **पांच पाप** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित श्यामलालजी (अध्यक्ष–गोपाचल न्यास, ग्वालियर), मुख्य अतिथि पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्रजी जैन (मंत्री – वासुपूज्य मंदिर समिति), पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ग्वालियर (संयोजक – समयसार विद्यानिकेतन) व पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री (निर्देशक – समयसार विद्यानिकेतन) थे। गोष्ठी का मंगलाचरण कृष्णा जैन ग्वालियर ने, संयोजन आकिंचन जैन खनियांधाना व आदि जैन टीकमगढ ने एवं संचालन प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 21 जुलाई को **अष्टम्** रविवारीय गोष्ठी **चार गतियाँ** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री गणेशीलालजी, मुख्य अतिथि श्री उदयजी जैन दाल बाजार एवं विशिष्ट अतिथि श्री ज्ञानचंदजी थे। मंगलाचरण शाश्वत जैन खनियांधाना ने, संयोजन आकिंचन जैन खनियांधाना व आदि जैन टीकमगढ ने एवं संचालन प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई !

प्रशांत अच्युतकांत पारस

(1) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक **प्रशांत शास्त्री खेकड़ा** ने जैनदर्शन विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्णकर **J.R.F.** स्कॉलरशिप प्राप्त की। इसके अतिरिक्त **अच्युतकांत शास्त्री एवं पारस शास्त्री खेकड़ा** ने जैनदर्शन विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की।

(2) उदयपुर (राज.) निवासी सुश्री विपाशा जैन सुपुत्री डॉ.ममता–राजकुमारजी शास्त्री शाश्वतधाम ने संस्कृत साहित्य (कोड 73) विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्णकर देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं जे.आर.एफ. स्कॉलरशिप प्राप्त की। ज्ञातव्य है कि विपाशा जैन ने वरिष्ठ उपाध्याय, शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाओं में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

(3) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक **रमेशजी शास्त्री चेन्नई, सचिनजी शास्त्री भगवां, हर्षितजी शास्त्री खनियांधाना एवं अनुभूति शास्त्री दिल्ली** का केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षक के रूप में चयन हुआ है।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

स्थापना दिवस संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में 24 जुलाई 1977 को प्रारम्भ हुये 'श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का 43वाँ स्थापना दिवस दिनांक 24 जुलाई 2019 को भव्यरूप से मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने की। इसके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री शांतिलालजी गंगवाल, श्री हीराचंदजी बैद, संजयजी सेठी, प्रमोदजी शास्त्री, संजीवजी खड़ैरी, जिनकुमारजी शास्त्री, गौरवजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, नीशूजी शास्त्री, अनेकांतजी शास्त्री, अभिजीतजी पाटील, कु. प्रतीति पाटील, श्रीमती आशा पाटील, श्रीमती स्तुति जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' ने अपने वक्तव्य में महाविद्यालय की ऐतिहासिकता एवं तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में विशेष योगदान को प्रस्तुत किया। साथ ही संयम जैन गुढाचन्द्रजी (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने सुन्दर कविता के माध्यम से एवं मयंक जैन बण्डा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने वक्तव्य के माध्यम से महाविद्यालय के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम के बीच में ही शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा **"Super 13"** नाटक का मंचन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के प्रारम्भिक दिनों को जीवन्त बनाने का अतिसुन्दर कार्य किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सहज जैन पिड़ावा एवं संचालन सम्मेद खोत कोल्हापुर, वैभव जैन ग्वालियर व रवीन्द्र जैन मड़देवरा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 14 जुलाई को '**सिद्धचक्र महामंडल विधान : एक अनुशीलन**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. सनतकुमारजी जैन जयपुर थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अरविन्द जैन खड़ैरी (उपाध्याय वरिष्ठ), संयम जैन गुढाचन्द्रजी (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण कपिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के संयम शाह, अर्पित जैन भिण्ड ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 21 जुलाई को **वीर शासन : एक गवेषण** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. प्रेमचंदजी रांवका जयपुर थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सर्वज्ञ जैन गुढाचन्द्रजी (उपाध्याय वरिष्ठ), अखिल जैन मण्डीदीप (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण मानस जैन बांसवाड़ा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सजल जैन आरोन एवं मनित जैन फुटेरा ने किया। आभार प्रदर्शन दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने किया।

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ जनता कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में जनता कॉलोनी जैन सभा एवं जैन स्वाध्याय मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर वृहद् स्तर पर तीनलोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान में मंगल कलश विराजमान श्री कमलेशजी गंगवाल परिवार ने एवं ध्वजारोहण श्री महेन्द्रजी राहुलजी गंगवाल परिवार ने किया। विधान में जयपुर की अनेक कॉलोनियों से पधारे 250 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवजी गोधा के निर्देशन में पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न कराये गये। प्रतिदिन सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त डॉ. संजीवजी द्वारा प्रोजेक्टर पर विशेष कक्षा का लाभ मिला।

समस्त कार्यक्रम जैन सभा के अध्यक्ष श्री अशोक गंगवाल एवं मंत्री श्री उजास जैन तथा समन्वयक श्री गौरव जैन के नेतृत्व में पण्डित राजेशजी शास्त्री, सुनीताजी कासलीवाल, मीनाजी अजमेरा, सुनीलाजी गंगवाल, श्री पी.सी. छाबड़ा, चन्द्राजी जैन एवं नीलमजी जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

2. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ लामरोड स्थित कहान नगर में पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 16 जुलाई तक अष्टाह्निका पर्व मनाया गया, जिसमें राजमलजी पवैया द्वारा रचित श्री प्रवचनसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, ब्र. मनोजजी जबलपुर एवं पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुये।

3. ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ आत्मायतन में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 9 से 17 जुलाई तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामंडल विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अनिलजी धवल भोपाल द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। विधान समाप्ति पर वीरशासन जयंती के दिन श्रीजी की विशाल शोभायात्रा निकाली गई। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये।

4. अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पुरानी मण्डी स्थित सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 16 जुलाई तक नवलब्धि विधान, नंदीश्वर पंचमेरु संबंधी विशेष पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित निर्मलकुमारजी सिंघई सागर द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित आकाशजी शास्त्री बांदकपुर द्वारा संपन्न हुये। **- प्रकाश पाण्ड्या, अजमेर**

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण कुलभूषण छात्रावास की **चतुर्थ** ज्ञानगोष्ठी दिनांक 14 जुलाई को **देव-शास्त्र-गुरु : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. किरणजी शाह पुणे एवं मुख्य अतिथि डॉ. सतीशजी कांकरिया नासिक थे। निर्णायक के रूप में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन, श्रीमती कंचन जैन, श्रीमती शिल्पी जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान प्रतीक जैन अम्बड ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रतीक जैन अम्बड एवं संचालन निशांत जैन शिरपुर व परिमल जैन अकोला ने किया। आभार प्रदर्शन श्री ओमप्रकाशजी जोगी व श्री लालचंदजी सातपुते ने किया।

● **पंचम** ज्ञानगोष्ठी दिनांक 21 जुलाई को **पांच पाप : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री लालचंदजी सातपुते एवं मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाशजी जोगी व श्री ऐनकुमारजी जैन थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन, श्री श्यामजी महाजन नासिक एवं श्रीमती कंचन जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान अक्षत जैन बुलढाणा ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण अनुराग जैन एवं संचालन वेदांत जैन व पार्श्व जैन ने किया। आभार प्रदर्शन श्री कुलभूषणजी जैन ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई (अध्यात्म स्टडी सर्किल)	श्वेताम्बर पर्यूषण
3 से 12 सितम्बर	दिल्ली	दशलक्षण महापर्व
13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
24 से 28 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
4 से 12 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com